माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म

कुरआन में अल्लाह तबारक व तआला ने फरमायाः

"और तेरा परवरिदगार साफ साफ हुक्म दे चुका है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करना और माँ बाप के साथ एहसान करना, अगर तेरी मौजूदगी में उनमें से एक या यह दोनों बुढ़ापे को पहुंच जायें तो उनके आगे उफ तक न कहना न उन्हें डाँट डपट करना बल्कि उनके साथ अदब व एहतराम से बात चीत करना और आजिजी और मुहब्बत के साथ उनके सामने तवाजो (आदर) का बाजू पस्त रखे रखना और दुआ करते रहना कि ऐ मेरे परवरदिगार! उन पर वैसा ही रहम कर जैसा उन्होंने मेरे बचपन में मेरी परवरिश की है"। (सूरे बनी इस्राईल-२३-२४)

इस आयत में अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी इबादत के साथ दूसरे नम्बर पर माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म दिया है जिससे माँ-बाप की फरमाबरदारी, उनकी सेवा और उनके मान-सम्मान की अहमियत स्पष्ट है अर्थात अल्लाह को रब मानने के तकाजों के साथ माँ-बाप की फरमांबरदारी के तक़ाज़ों की अदायगी ज़रूरी है। हदीसों में भी इसकी अहमियत और ताकीद (अनिवार्यता) को खूब स्पष्ट कर दिया गया है। फिर बुढ़ापे में खास तौर से उनके सामने "हूं" तक कहने और उनको डांटने डपटने से मना किया गया है क्यों कि बुढ़ापे में माँ-बाप तो कमज़ोर, बेबस, लाचार हो जाते हैं जबकि औलाद जवान और आर्थिक संसाधनों पर काबिज़ होती है इसके अलावा जवानी के तेज़ जजबात और बुढ़ापे के उतार चढ़ाव के अनुभव में मतभेद होता है इन हालात में माँ-बाप के सम्मान के तकाज़ों का ख्याल रखना बहुत ही कठिन चरण होता है लेकिन फिर भी अल्लाह के यहाँ वही कामयाब होगा जो इन तक़ाज़ों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखेगा और हर वक़्त और हर हाल में मां-बाप की खिदमत व फरमाबरदारी का कर्तव्य पूर्ण रूप से अंजाम देगा।

पक्षी जब अपने बच्चों को अपने करूणा के छांव में ले लेता है तो उनके लिये अपने बाजुओं को पस्त कर देता है इसी तरह तुम भी मां-बाप के साथ अच्छा और करूणा भरा व्यवहार करो और इसी तरह उनका पालन पोषण करना है जिस तरह उन्होंने बचपन में किया था।

जब परन्दिा उड़ने और बुलन्द होने का एरादा करता है तो अपने बाजू फैला देता है और जब नीचे उतरता है तो बाजुओं को पस्त कर लेता है इस पहलू से बाजुओं के पस्त करने के अर्थ मां-बाप के सामने तवाजो और आजिजी (विनम्रता) का इज़हार करने के होंगे।

(तफसीर अह्सनुल बयान, पृष्ठ ६८०-६८१ प्रकाशकः मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द)

मासिक

इसलाहे समाज

फरवरी 2021 वर्ष 32 अंक 2

जुमादल उख़्रा 1442 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् हक़्

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये
- टोटल पेज 28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़्

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार... 2
2. जागरूकता की ज़रूरत 4
3. प्रतिक्रिया से पहले विचार 6
4. अल्लाह तआला की हिफाज़त करो... 7
5. सहाबा किराम का अल्लाह से भय 10
6. शिक्षा एवं दीक्षा 11
7. पति-पत्नी के अधिकार 12
8. प्रेस रिलीज़ (गणतंत्र दिवस समारोह) 15
9. प्रेस रिलीज़ (मौलाना सफी अहमद मदनी) 17
10. प्रेस रिलीज़ (मौलाना अज़ीजुल हक उमरी) 19
11. जमाअती ख़बर 20
12. हलाल कमाई की अहमियत 21
13. पैग़म्बर मुहम्मद स० के उपदेश 22
14. हसद न करो 25
15. प्रेस रिलीज़ (उत्तराखण्ड प्राकृतिक आपदा) 26
16. हमारी सोच कैसी होनी चाहिए 27
17. गाँव महल्ला में मकातिब काइम कीजिए 27
18. अहले हदीस मंज़िल और कम्पलैक्स 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सुस्ती और काहिली हानिकारक

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अरबी भाषा की प्रसिद्ध कहावत है कि सुस्ती और झल्लाहट से बचो क्योंकि सुस्ती करोगे तो हक़ अदा न हो पाए गा और अगर झल्ला गए तो फिर हक़ पर काइम रहना मुश्किल हो जाएगा और सब्र व संयम का दामन छूट जाए गा और यह न रहा तो फिर इन्सान के पास बचा ही क्या?

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फरमाया करते थे कि जब मैं किसी ऐसे शख्स को देखता हूं जो देखने में बड़ा भला और अलबेला (लापरवाह) लगता है तो पूछता कि भई यह करता क्या है? अगर बताया जाता कि इसके ज़िम्मे कोई काम नहीं और न ही यह कुछ करता है तो फिर वह मेरी नज़रों से गिर जाता है। इसी लिये कहते हैं कि

बेकार मबाश कुछ किया कर
कपड़े उधेड़ कर सिया कर

भला दुनिया में उससे ज़्यादा अभागा और मनहूस कौन होगा जो खुद कुछ न करे न ग़ैरों को नफा पहुंचाए। न उम्मत उससे लाभान्वित हो न परिवार के लोग उससे फायदा उठा सकें और न वह खुद अपनी भलाई के लिये कुछ कर सके। सुस्ती और गफलत के बड़े नुक़सानात और बुरे परिणाम बहुत हैं।

सबसे पहला ख़सारा तो दुनिया में ही है। ऐसे इन्सान को नाकारा, नादान और बेकार समझा जाता है वह चाहे जितना योग्य और सक्षम हो, आखिरत (मरने के बाद वाले जीवन) में खसारा इससे कहीं ज़्यादा और हानिकारक है।

सुस्ती से इबादत करने और फराइज़ व वाजिबात में कमी पैदा हो जाती है यह इबादत की राह का सबसे बड़ा रोड़ा है। अल्लाह से रिश्ता कटने के बाद बन्दा किसी लायक़ नहीं रह जाता, सुस्ती और काहिली के परिणाम हमेशा बुरे होते हैं। एक क्षात्र अगर शिक्षा में कोताही और सुस्ती करे तो वह अपनी दुनिया व आखिरत को बर्बाद करने वाला है। इमाम इब्ने ज़ौज़ी रह० फरमाते हैं कि जो शख्स काहिली करता है और पीछे रह जाता है तो उसके साथी और हमजोली उससे आगे बढ़ जाते हैं और ज्ञान एवं कला में कुशल हो कर विद्वान कहलाते हैं और सुस्ती करने वाला जाहिल का जाहिल रह जाता है। दूसरे लोग मालदार बन जाते हैं और यह फक़ीर बना फिरता है। तो भला बताओ ऐसी राहत व आराम और सुस्ती का क्या अर्थ है? और यह किस काम का है जिस से परेशानी और पश्चाताप बढ़ जाए।

अब्दुल वाहिद बिन सुलैमान बिन अब्दुल मलिक से जब पूछा गया कि तुम्हारी सलतनत का अन्त कैसे हुआ तो उसने साफ साफ बता दिया सुबह देर तक सोना, देर रात तक फुज़ूल कामों में मस्त रहना हमारे

पतन का मूल कारण है सुबह जिस वक़्त बर्कतें नाज़िल होती हैं, दूसरे लोग चुस्त और चाक व चौबन्द हो कर कर्मभूमि में कूद पड़ते थे और हमारे छोटे बड़े मीठी नींद के मज़े ले रहे होते थे और रात जिस में उठकर अल्लाह वाले तहज्जुद पढ़ते, रब से अपना रिश्ता जोड़ते और मज़बूत होते हैं हम खाने पीने और ऐश व आराम में मगन रहते थे इस लिये सलतनत का अन्त होना ही था। हमारे नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अपनी उम्मत को सुबह को जल्दी उठने और रात में इबादत करने की शिक्षा देते हुए हुआ करते थे।

आज हम अपनी सुस्ती और काहिली, गफलत और लापरवाही की वजह से संसाधन उपलब्ध होने और तादाद की अधिकता के बावजूद पतन के शिकार हैं, अपमान हमारा मुकददर बनता जा रहा है ऐसे में हमें हर स्तर पर जागरूक और होशियार होने और गफलत की चादर को उतार फैंकने की ज़रूरत है। अगर हम चाहते हैं कि हमारी सरहदों की हिफाज़त हो, हमारे दीन व ईमान और शरीअत की हिफाज़त हो, हम विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान पर विराजमान हों और मानवता, देश एवं समुदाय की सेवा सहीह तौर पर अंजाम देने के लिये सक्षम हों तो हमें तमामतर मोमिनाना तौर पर और जागरूक इन्सानों की तरह कर्म भूमि में उतरना चाहिए और इसके लिये अल्लाह की मदद और सहायता तलब करनी चाहिए जैसा कि पैगम्बरों का यही तरीका था। उपदेश, नसीहत, की बातों, पुण्य और सज़ा पर आधारित आयतों, हदीसों को दोहराना भी इन्सान को गफलत से दूर रखता है और बेकारी और नाकामी से इन्सान को बचाता है। और यह बात सर्वमान्य है कि जो कौम बेकार, सुस्त और आराम पसन्द हो जाती है उससे भलाई उठ जाती है और बुराई अपनी जड़ पकड़ लेती है, कितने आरोपों और लांछनों का दरवाज़ा खुल जाता है जो बन्द होने का नाम नहीं लेता। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि आखिरी जमाने में कुछ ऐसे लोग हों गे जिन का प्रिय काम और सर्वोत्तम कार्य एक दूसरे को लांछन करना हो गा वह असल काम को छोड़ कर इसी तरह के लांछन, टिप्पणी और लान-तान में लगे रहेंगे उनका कोई और काम नहीं होगा हालांकि हर स्तर पर काम करने वालों की बड़ी ज़रूरत होगी। बुखारी शरीफ की रिवायत के अनुसार एक वक़्त ऐसा आने वाला है कि तुम लोगों को ऐसे सौ ऊंटों के समान पाओगे कि उनमें से एक भी सवारी के योग्य (लायक) नहीं होगा।

अल्लाह की याद और उसकी इबादत से गफलत काहिली और सुस्ती की भूमिका एवं कारण बन जाती है जिस की वजह से न केवल असल मकसद छूट जाता है बल्कि धीरे धीरे नुक्सान का एहसास तक भी खतम हो जाता है। इस लिये दुनिया व आखिरत की कामयाबी के लिये अल्लाह के जिक्र को हर हाल में लाज़िम पकड़े रहना, सुस्ती व काहिली की चादर को उतार फैंकना और अपने आप को सक्रियता का आदी बनाना ज़रूरी है।

❑ ❑ ❑

प्रतिक्रिया से पहले विचार

नौशाद अहमद

इस संसार में विभिन्न विचार रखने वाले रहते हैं। सब की अपनी अपनी राय होती है, कोई ज़रूरी नहीं है कि हर घटना के बारे में हर कोई एक ही विचार व सोच रखे इस की वजह यह है कि जो खबर आती है उसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता कि वह गलत है या सहीह। ऐसा बहुत देखने और सुनने में आता है कि एक खबर आने के बाद उसका खण्डन भी कर दिया जाता है जिस ने खबर और खण्डन को पढ़ा वह दोनों खबर से आगाह रहा और जिसने केवल खबर ही पढ़ी वह खबर ही तक सीमित रहा यानी यह खबर उसके लिये अफवाह साबित हुई क्योंकि उसे खबर के खण्डन का पता नहीं चल सका। इसी तरह देखा जाता है कि एक छोटी खबर बड़ी होशियारी से बड़ी बना दी जाती है और एक बड़ी खबर छोटी बना दी जाती है जिसको समझने के लिये बहुत बा खबर होना होगा वर्ना कोई भी गलत दिशा में जा सकता है।

किसी भी खबर के विभिन्न पहलू होते हैं कोई ज़रूरी नहीं है कि उस खबर के हर पहलू पर हमारी निगाह पहुच जाती हो क्योंकि हम तो इन्सान ही हैं और कोताही हो जाना इन्सान के स्वभाव में है। इसी लिये कहा जाता है कि हर खबर को पहले बड़ी गहराई से परखने और जांचने की ज़रूरत है इस से पहले उस खबर पर कोई प्रतिक्रिया देना बुद्धिमानी नहीं होगी क्योंकि जल्दबाजी ही में एक बड़ी खबर छोटी खबर बन जाती है और एक बड़ी खबर छोटी बन जाती है।

कुछ लोगों को नाम कमाने का बड़ा शौक और रूचि होती है लेकिन वह यह भूल जाता है कि हमारे इस शौक और रूचि का अंजाम क्या होगा?

इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को खबर की छान बीन करने और उस खबर की तह तक जाने का हुक्म दिया है इस का मतलब यह है कि हर हाल में सही खबर का पता लगाना है वर्ना गलत खबर का अंजाम हमेशा गलत होता है, यह पत्रकारिता का सिद्धांत है कि कोई भी बात बिना छान बीन के न लिखी जाए, लेकिन आज कल इसके विपरीत देखा जा रहा है। कुरआन ने आज से १५ सौ साल पहले ही यह कह दिया है कि हर खबर के बारे में छान बीन कर लेने में ही बेहतरी है। कुरआन स्पष्ट शब्दों में कहता है।

"ऐ मुसलमानो! अगर तुम्हें कोई फासिक़ खबर दे तो तुम उसकी अच्छी तरह से तहकीक कर लिया करो। ऐसा न हो कि नादानी (अज्ञानता) में किसी कौम को ईज़ा (दुख) पहुचां दो फिर अपने किए पर पशेमानी उठाओ"। (सूरे हुजुरात-६) इस आयत में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को बयान किया गया है जिस की बड़ी अहमियत है इस लिये हर व्यक्ति समाज और शासन की जिम्मेदारी है कि वह हर खबर की छान बीन करे ताकि गलत फहमी में किसी के खिलाफ कोई कार्रवाई न हो, इसी में समाज की गरिमा भी है और महिमा भी।

अल्लाह तआला की हिफाज़त करो वह तुम्हारी हिफाज़त करेगा

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी के पीछे था, आप ने फरमायाः मेरे प्यारे! मैं तुम्हें कुछ बातें सिखला रहा हूं (मुसनद अहमद की एक रिवायत के मुताबिक) यह भी फरमायाः इन बातों से तुझे अल्लाह नफा देगा। वह बातें यह हैं कि तुम अल्लाह की हिफाज़त करो तो अल्लाह तेरी हिफाज़त फरमाएगा। तुम अल्लाह की हिफाज़त करो तो तुम उसे अपने सामने पाओगे, जब तुम मांगो तो अल्लाह से मांगो और जब तुम मदद मांगो तो अल्लाह से मदद मांगो और सुनो! अगर पूरी उम्मत तुम्हें किसी तरह का फायदा पहुंचाने पर एकजुट हो जाए तो वह उतना ही फायदा पहुंचा सकती है जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है और अगर वह तुम्हें कुछ भी नुकसान पहुंचाने पर जमा हो जाए तो इससे ज़्यादा कुछ नुकसान नहीं पहुंचा सकती जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है। कलम उठा लिया गया और तकदीर के सहीफे (ग्रंथ) खुश्क हो गये हैं। (तिर्मिज़ी २५१६ मुसनद अहमद भाग १ हदीस न २६३)

इस में कोई सन्देह नहीं कि यह एक ऐसी नसीहत है जिस पर अमल करने से हमारी ज़िन्दगी संवर सकती है हमें चाहिए कि हम कुरआन व हदीस की तरफ लौटें इस लिये कि हमारी तमाम समस्याओं का समाधान कुरआन व हदीस की शिक्षाओं में निहित है। शैख सालेह बिन उसैमीन रह० इस हदीस के बारे में लिखते हैं कि हर शख्स को चाहिए कि वह इस हदीस को हमेशा याद रखे और इन नसीहतों पर अमल करे जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने प्यारे भाई अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहो अन्हुमा को की है।

बन्दे का अल्लाह की हिफाज़त का अर्थ बड़ा व्यापक है यानी इस का मतलब अल्लाह की बनाई गई सीमाओं, अधिकार और कर्तव्यों की हिफाज़त है। सीमाओं की हिफाज़त का मतलब यह है कि बन्दा अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों से बचे और हलाल कामों को अपनाए।

अल्लाह की हिफाज़त का यह भी मतबल है कि अल्लाह ने हमें जिन आमाल की हिफाज़त का हुक्म दिया है हम उन आमाल की हिफाज़त करें यानी उन पर अमल करें। इनमें नमाज़ प्रथम सूची में आती है कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया "नमाज़ों" की हिफाज़त करो" (सूरे बकरा २३८) इसी तरह अल्लाह ने निगाहों की हिफाज़त का भी हुक्म दिया है "ऐ नबी मोहतरम, मुसलमान मर्दों से कह दें कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफाज़त करें"। (सूरे नूर-३०)

इसी तरह हमें अपने दूसरे अंगों, कान, नाक, आंख, जुबान, दिल दिमाग, पेट और गुप्तांग की हिफाज़त करनी चाहिए और उनका इस्तेमाल अपने रब की मंशा के मुताबिक करना चाहिए। क्योंकि

अल्लह के फरमान के मुताबिक ''कान, आंख और दिल उन में से हर एक से पूछ गछ की जाने वाली है'' (सूरे बनी इस्राईल-३६) पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ''जिस शख्स ने अपनी जुबान और गुप्तांग की हिफाज़त कर ली वह जन्नती है'' (तिर्मिज़ी)

स्पष्ट रहे कि अल्लाह को अपनी हिफाज़त की कोई ज़रूरत नहीं। वह किसी का मोहताज नहीं, वह सब का रखवाला है जिस का अर्थ यह है कि वह अपने बन्दों के तमाम कर्मों को जमा करता है और आमाल के अनुसार बदला देता है और अपने बन्दों की हिफाज़त करता है बन्दों का अल्लाह से बेहतर रक्षक कौन हो सकता है। जैसा कि अल्लाह ने कुरआन मैं फरमायाः ''अल्लाह ही बेहतरीन मुहाफिज़ है और वह सब मेहरबानों से बड़ा मेहरबान है'' (सूरे युसुफ-६४) सारांश यह है कि अल्लाह की हिफाज़त का मतलब दीन की हिफाज़त है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करो गे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा। (सूरे मुहम्मद-७) जब बन्दा अल्लाह के दीन का रक्षक होगा तो अल्लाह इसका बदला हिफाज़ती अमल से देगा। अल्लाह की अपने बन्दों की हिफाज़त का अर्थ यह है कि ऐसे लोगों की अल्लाह की तरफ से हिफाज़त होगी, अल्लाह तआला उसके दीन व दुनिया की हिफाज़त फरमाएगा, हर तरह की भलाई मिलेगी और हर तरह के नुकसानात से सुरक्षित रहेगा। अल्लाह तआला उसके दीन व ईमान की हिफाज़त हर बुराई से करेगा।

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''इसी तरह हम उससे बुराई और बेहयाई दूर कर देंगे बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों में से है।'' (सूरे युसुफ-२४)

अल्लाह तआला उसके आचरण और स्मिता की हिफाज़त करेगा जैसा कि अल्लाह तआला ने अम्मा आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा की पवित्रता की हिफाज़त की और क्यामत तक कुकर्मियों की जुबानों पर मुहर लगा दी। अल्लाह तआला बन्दे के जान माल और परिवार की हिफाज़त करेगा। इस बारे में सूरे क़हफ में दो यतीम बच्चों के किस्से का बयान पाठप्रद है। कुरआन में है।

''दीवार का किस्सा यह है कि इस शहर में दो यतीम बच्चे हैं जिन का खज़ाना उनकी इस दीवार के नीचे दफन है, उनका बाप बड़ा नेक शख्स था तो तेरे रब की चाहत थी कि यह दोनों यतीम अपनी जवानी की उम्र में आ कर अपना यह ख़ज़ाना तेरी रब की मेहरबानी (करूणा) और रहमत से निकाल लें'' (सूरे कहफ-१२)

अल्लाह अपने बन्दों की हिफाज़त के लिये ऐसे फरिश्तों को तैनात कर देता है जो दिन व रात बन्दे की पहरेदारी करते हैं और दुर्घटनाओं एवं बुराइयों से बचाते हैं। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''उस अल्लाह के पहरेदार इन्सान के आगे पीछे तैनात हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी निगेहबानी करते हैं' (सूरे रअद-११)

अल्लाह तआला नुकसान पहुचाने वाले जानवर से भी हिफाज़त करता है जैसे कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सेवक सफीना एक द्वीप में फंस गये। इस्लामी काफिले से भटक गये तो उनकी नज़र एक शेर पर पड़ी उन्होंने शेर से कहा कि मैं अल्लाह के रसूल का सेवक हूं और मेरा मामला यह है फिर वह शेर उनके साथ चलने लगा, शेर उनके रास्ता बताता रहा और जब वह गंतव्य (अपनी मंज़िल) पर पहुंच गये तो शेर वहां से लौट गया। (तबरानी)

अफसोस आज मुसलमानों की

बड़ी तादाद अल्लाह के दर को छोड़ कर दूसरे स्थानों से जुड़ गई जिन के बारे में वह आस्था रखते हैं कि वह हमारी मदद और हिफाज़त करेगा। काश व ऐसा करने के बजाए अल्लाह पर भरोसा करते और सोते वक़्त कुरआन की आयत आयतुल कुर्सी पढ़ते जिसके बारे में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जिस ने रात में आयतुल कुर्सी पढ़ ली तो उसे अल्लाह की तरफ से हिफाज़त के लिये बॉडी गई मिल जाए गा और सुबह तक शैतान उसके करीब भी न आ सकेगा''। (सहीह बुखारी)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह व शाम यह दुआ पढ़ते थे ''अल्लाहुम्मह फजनी मिन बैनी यदैया व मिन खलफी व ऐं यमीनी व अन शिमाली व मिन फौकी व अऊजो बि अज़ मतिका अन उ़ग्ताला मिन तहती''

''ऐ अल्लाह तू मेरी सुरक्षा फरमा मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दाईं तरफ से और मेरी बाईं तरफ से और मेरे ऊपर से, मैं पनाह मांगता हूं तेरी महानता के साथ इस बात से कि मैं अपने पांव के नीचे धंसा दिया जाऊं'' (अबू दाऊद-६७४)

एलाने दाख़िला

(मदारिस से फ़ारिग़ तलबा के लिए)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तख़स्सुस फ़िद दिरासातिल इस्लामी

में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन जारी है। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। और दाख़िला इमतिहान की तारीख़ का इन्तेज़ार करें।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव
जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली-110025
फोन 011-26946205 , 011-23273407
Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

सहाबा किराम का अल्लाह से भय

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते थे कि मुहासबा किये जाने से पहले स्वयं अपना मुहासबा (आत्मनिरीक्षण) करो और अपने कर्मों का वज़न किये जाने से पहले तुम खुद अपने कर्मों को तौलो। अगर आज अपना मुहासबा कर लो गो तो कल हिसाब किताब के दिन तुम्हें बड़ी आसानी हो जाएगी। सब से बड़ी पेशी के लिये स्वंय को अच्छा बना लो जिस दिन तुम पेश किए जाओगे तो कोई चीज़ तुम से ढ़की छिपी नहीं रहेगी। सीरत की किताबों में इस संबन्ध में अपने पूर्वजों के असंख्य वाक़आत मौजूद हैं जो हमारे लिये पाठप्रद और आदर्श की हैसियत रखते हैं। हज़रत अबू बक्र सिददीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बहुत रोया करते थे और फरमाते थे ''रोओ, अगर रोना नहीं आ रहा तो रोने जैसी शक्ल बना लो'' फरमाते ''अल्लाह की क़सम मैं चाहता हूं कि मैं पेड़ होता जिसे खा लिया जाता और काट दिया जाता'' फिर हिसाब किताब का झमेला ही न रहता।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के बारे में है कि उन्होंने सूरे तूर की तिलावत की और जब कुरआन की आयत इन्ना अजाबिका ल वाकेउन (यकीनन तेरे रब का अज़ाब निश्चित रूप से घटित होने वाला है) पर पहुंचे तो रोने लगे और बहुत रोये यहां तक कि बीमार पड़ गये और लोग उनकी इयादत (हाल चाल) मालूम करने आने लगे। वह जब भी रात में इबादत करते वक़्त इस आयत पर पहुंचते तो भय में लिप्त हो जाते थे और कई कई दिन घर में रह जाते कि लोग बीमार समझ कर बीमार पुर्सी के लिये आने लगते। बयान किया जाता है कि रोने की वजह से आसुओं से उनके गालों पर दो काली लकीरें बन गई थीं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उनसे एक बार कहा ''अल्लाह ने आप के ज़रिये शहर आबाद कराये और दुनिया के एक बड़े एलाक़े को फतेह कराया'' आप फिर भी अल्लाह से इतना डरते हैं हज़रत उमर फरमाते '' मैं तो बस इतना चाहता हूं कि छुटकारा मिल जाए न सवाब मिले और न ही सज़ा का हक़दार बनूं।''

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जब कब्र पर खड़े होते तो रोने लगते यहां तक कि उनकी दाढ़ी भीग जाती और फरमाते कि अगर मुझे जन्नत और जहन्नम के बीच खड़ा कर दिया जाएगा तो पता नहीं कि मुझे किस में डाले जाने का हुक्म दिया जाएगा। मुझे तो पसन्द है कि अन्जाम तक पहुंचने से पहले ही मुझे राख बना दिया जाए।

हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो भी बहुत रोते थे और अपने मन के मुहासिबे से बहुत भय खाते थे और दो चीज़ों से वह खास तौर से डरते थे लम्बी लम्बी आरजुओं से दूसरे इच्छाओं की पैरवी करने से, फरमाते कि लम्बी आरजू से, इस लिये कि वह आखिरत को भुला देती है और मन की इच्छाओं से इस लिये कि वह हक़ को कुबूल करने में रूकावट डालती है। आख़िरत के बारे में उनकी चिन्ता और जीवन के हर चरण में मन का निरीक्षण हमारे लिये आदर्श है।

शिक्षा एवं दीक्षा

रेहाना खातून

इस वक़्त कोई भी शिक्षा की अहमियत से इन्कार नहीं कर सकता, आज लोगों में शिक्षा के संबन्ध में जागरूकता पैदा हो गई है, यही वजह है कि अब ऊंची तालीम के लिये हर कोई प्रयासरत है, हर कोई उच्च शिक्षा को अपनी तरक्की की सीढ़ी समझ रहा है, यह एहसास हर मां बाप को है। यही सोचा जाता है कि बच्चे भविष्य के निर्माता बनेंगे। इसी आधार पर यह ज़रूरी है कि बच्चों की तर्बियत एवं दीक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए। अध्यापकों की भी यह आशा होती है कि मेरे अधीन पढ़ने वाले बच्चे अपने देश परिवार का नाम रोशन करें।

तालीम की अहमियत उजागर होने के बाद सबसे पहले ज़रूरी है कि हम अपने वक़्त की क़द्र करें, उसके एक-एक क्षण को ग़नीमत और बहुमूल्य समझें, आज देखा जा रहा है कि सहीह तर्बियत और उचित शिक्षा न होने की वजह से ज्यादातर लोग अपने वक़्त को सोशल मीडिया पर किस कद्र बर्बाद कर रहे हैं, वक़्त की अहमियत का एहसास नहीं है, टी.वी. सीरियल ज़िन्दगी की एक आदत सी बनती जा रही है, जिस में केवल वक़्त की बर्बादी के सिवा कुछ नहीं है। टी.वी. और सोशल मीडिया को अगर एक नेमत माना जाए तो यह बहुत उपयोगी भी है शर्त यह है कि इस का स्तेमाल सुचारू रूप से किया जाए, अपनी बात को दूसरों तक पहुंचाने का बहुत बड़ा माध्यम है लेकिन मां बाप की तरफ से सहीह शिक्षा और दीक्षा न होने के कारण हमारी नई पीढ़ी सोशल मीडिया के चकाचौंध का शिकार होती जा रही है। इसकी रोक थाम के लिये जरूरी है कि सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू को ज्यादा से ज़्यादा साधारण किया जाए, इसकी उपयोगिता से लोगों को अवगत कराया जाए, ज़्यादातर लोगों ने सोशल मीडिया को अपने वक़्त को पास करने का माध्यम बना लिया है जब कि वक़्त को स्तेमाल करने के दूसरे माध्यम भी हैं, कुरआन की तफसीर (टीका) का हदीस का अध्ययन किया जाए इतिहास को भी अपने अध्ययन का केन्द्र बनाना चाहिए, सीरत का इल्म हर किसी को होना चाहिए इन सब बिन्दुओं और पहलुओं से अगर देखा जाए तो बहुत ही खेदजनक स्थिति सामने आती है हमारी नई नस्ल अपने बुनियादी कर्तव्यों से दूर होती चली जा रही है, मस्जिद के इमाम अपने उददेशों और मकसदों से गाफिल हैं, मस्जिदों को शिक्षा एवं प्रशिक्षण का केन्द्र बनाया जा सकता है, आस पास के बच्चों को दीनियात से जोड़ा जा सकता है, यह हमारा धार्मिक कर्तव्य है, वक़्त को इन सब लाभकारी कामों में लगाया जा सकता है इसके लिये सबसे पहले बच्चों के मां बाप और अभिभावकों को जागरूक होना होगा और अपने घरेलू व्यस्तताओं में से वक़्त निकाल कर बच्चों की सहीह रहनुमाई करनी होगी। आम तौर से घरों में होता यह है कि हम लोग दूसरे कामों के लिये वक़्त निकाल लेते हैं लेकिन बच्चों की पढ़ाई पर नज़र रखने के लिये लापरवाही कर जाते हैं जो बाद में हमारे पछतावे का कारण और सबब बन जाता है और आगे का रास्ता मुश्किल हो जाता है।

पति-पत्नी के अधिकार

डा0 मुक़तदा हसन अज़हरी

इस्लाम ने सामाजिक व्यवस्था को अत्यधिक महत्व दिया है। उचित दिशा में यदि समाज का निर्माण न हो सके तो उसमें रहने वाले व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक सुख नहीं पा सकते। किसी समाज के उचित एवं सन्तुलित निर्माण के लिये आवश्यक है कि आपसी अधिकारों एवं कर्तव्यों का पूरा-पूरा ध्यान रखें। इस्लाम ने निकट सम्बन्धियों के अधिकारों की रक्षा पर बड़ा ध्यान दिया है तथा किसी भी प्रकार के अन्याय का कड़ाई के साथ विरोध किया है।

समाज में सन्तुलन तथा उसकी भलाई के लिये यह आवश्यक है कि उस समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों एवं हितों के साथ ही अन्य व्यक्तियों के अधिकारों तथा हितों का ध्यान रखे, तथा सदैव इस बात का प्रयास करे कि अधिकारों की प्राप्ति के साथ ही कर्तव्यों को भी निभाता रहे, वरना समाज का सन्तुलन स्थिर नहीं रह सकेगा, तथा इसके फलस्वरूप परिवार तथा उसके सभी सदस्य एक प्रकार के असन्तोष तथा मानसिक पीड़ा में ग्रस्त हो जायेंगे।

जीवन में अधिकारों एवं दायित्वों के दूरगामी प्रभाव के कारण इस्लाम ने पति-पत्नी के अधिकारों एवं दायित्वों का सविस्तार वर्णन किया है तथा दोनों से यह आपेक्षा की है कि वे अपने-अपने अधिकारों तथा दायित्वों के निर्वाह के विषय में विचार करते हुए सन्तान, समाज तथा परी उम्मत (इस्लाम धर्म के मानने वालों) के हितों को भी दृष्टिगत रखें। ऐसा न हो कि मनुष्य अपने अधिकारों की प्राप्ति के प्रयास में सन्तान, समाज या उम्मत के लिये क्षति का कारण बन जाये।

पत्नी के अधिकारः विवाह के उपरान्त पत्नी के निम्नलिखित अधिकार, पति पर लागू होते हैं।

१. भौतिक अधिकारः

क. महर की रकमः यह स्त्री का विशेष अधिकार है। इससे यह मांग नहीं की जा सकती कि वह महर की धनराशि से घरेलू सामग्री खरीदे, क्योंकि घरेलू आवश्यकताओं को पूर्ण करने या सजाने संवारने की जिम्मेदारी पति पर लागू होती है।

ख. **आवश्यक एवं अनिवार्य व्ययः** पुरूष का यह भी दायित्व है कि वह दैनिक आवश्यकताओं के व्यय की व्यवस्था करे, क्योंकि पत्नी सन्तान की देख-रेख तथा घरेलू कार्यों में व्यस्त रहती है, इस कारण वह जीविका कमाने के लिए कोई कार्य नहीं कर सकती।

२. नैतिक अधिकारः

अ. पत्नी का एक अधिकार यह भी है कि पति उसके साथ उचित व्यवहार करे। क़ुरआन की एक आयत में इस प्रकार के अधिकारों को बड़े ठोस रूप में स्पष्ट किया गया है।

“जैसे महिलाओं पर पुरूषों के अधिकार हैं वैसे ही महिलाओं के भी नियमानुसार अधिकार हैं”। (सूरे बक़्रः आयत २२८)

एक हदीस में है कि पूर्ण मोमिन वह है जिसके व्यवहार अच्छे हों तथा वह अपने परिवार पर दयालु

हो। (औनुल माबूद ४३१/३१)

शरीअत ने महिलाओं के साथ कठोरता या उन पर अत्याचार को कड़ाई के साथ रोका है तथा उनके साथ दया एवं नरमी के व्यवहार का आदेश दिया है। नबी स० का कथन है कि

''महिलाओं के पक्ष में भलाई की वसीयत स्वीकार करो, वह पसली से पैदा की गई है तथा पसलियों में सबसे ऊपर की पसली सबसे अधिक टेढ़ी है। यदि उसे सीधा करना चाहोगे तो टूट जायेगी और यदि उसे छोड़ दोगे तो सदैव टेढ़ी रहेगी, इसलिये महिलाओं के पक्ष में वसीयत स्वीकार करो। (फतहुल बारी २४३/१)

यदि किसी के पास एक से अधिक पत्नियां हों तो उनके मध्य प्रत्येक वस्तु में न्याय आवश्यक है। नबी स० का कथन है कि यदि किसी के पास दो पत्नियां हों तथा उनके बीच न्याय न करे तो कयामत (प्रलय) के दिन वह इस दशा में आयेगा कि उसका आधा शरीर झुका होगा।

अमर बिन अहवस रजिअल्लाहो अन्हो से एक लम्बी हदीस वर्णित है कि महिलाओं के साथ अच्छे व्यवहार को आवश्यक समझो, वह तुम्हारे अधीन हैं। जब तक उनसे निर्लज्जता प्रचलित न हो, उनके साथ अच्छा व्यवहार करो। तुम्हारा उन पर तथा उनका तुम पर अधिकार है। तुम्हारा अधिकार यह है कि वह किसी अन्य के साथ व्यभिचार न करें तथा किसी अपरिचित व्यक्ति को घर में न आने दें, तथा उनका अधिकार यह है कि तुम उन्हें अच्छा खाना खिलाओ और अच्छे वस्त्र पहनाओ। (इब्ने माजा ५६४/१)

अबू दाऊद की एक हदीस में यह भी वर्णित है कि पत्नी को चेहरे पर मत मारो, बुरा भला न कहो तथा क्रोध में उसे घर से न निकालो। (औनुल माबूद १८०/६)

एक अन्य हदीस में वर्णित है कि उत्तम मनुष्य वह है जिसका अपने परिवार के साथ व्यवहार अच्छा हो।

इस्लाम ने सामान्य रूप से महिलाओं के सम्बन्ध में धैर्य से काम लेने का आदेश दिया है। इसलिए यदि उनका कोई अप्रिय कार्य हो जाये तो पुरूष को सन्तोष तथा संयम से काम लेना चाहिए तथा उनके साथ सदव्यवहार बन्द नहीं करना चाहिए। कुरआन ने मुसलमानों को इस प्रकार सम्बोधित किया है।

''महिलाओं के साथ नियमानुसार निर्वाह किया करो, यदि तुम उन्हें किसी कारण नापसन्द करो तो भी निर्वाह करो, हो सकता है कि ईश्वर तुम्हारी अप्रिय वस्तु में तुम्हारे लिये बहुत ही अच्छाई पैदा कर दे''। (अन्निसा आयत १९)

ब. पति के लिये यह आवश्यक है कि वह जिस प्रकार पत्नी के खाने-पीने तथा पहनने ओढ़ने की व्यवस्था करता है, उसी प्रकार उसे रिश्तेदारों एवं सगे सम्बन्धियों के यहां भी जाने दे, यदि उसके घर (मायका) कोई बीमार हो तो उसे देखने का भी अवसर दे।

स. पत्नी के अधिकारों में उसकी भावनाओं का महत्व तथा उसके सुझाव का सम्मान भी है, यदि किसी समस्या में उसके सुझाव हितकारी हों तो उस पर व्यवहार आवश्यक है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी में हमें ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं। हुदैबिया के अवसर पर रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा रजियल्लाहो अन्हा की राय के अनुसार

व्यवहार किया था तो उससे मुसलमान पापों से सुरक्षित रहे।

द. नैतिक अधिकारों में यह बात भी महत्वपूर्ण है कि पति, पत्नी को इस्लाम की अनिवार्य बातों, आस्थाओं तथा उपासनाओं की शिक्षा दे, तथा शरीअत के आदेशानुसार व्यवहार करने का उपदेश दे। सूर तहरीम की आयत न. ६ में अल्लाह तआला ने परिवार तथा बाल बच्चों को नरक की आग से बचाने का जो आदेश दिया है, उस पर व्यवहार की एक सूरत यह हभी है।

य. पत्नी के सम्मान तथा मर्यादा का भी ध्यान रखना पुरूष की जिम्मेदारी है। ऐसी सभाओं तथा स्थानों से दूर रखना आवश्यक है जिससे मान सम्मान के मिटने का भय हो तथा इस्लामी नियमों, आदेशों तथा शिष्टाचारों का उल्लंघन होना निश्चित हो। इस प्रकार स्वभाविक रूप से भी, स्त्री के लिए ऐसा वातावरण बनाना चाहिए, जिसमें उसकी धार्मिकता की भावना का विकास हो सके, घर में साफ सुथरा धार्मिक तथा सभ्य साहित्य रखा जाये। जब तक महिला में उच्च विचारधारा तथा कार्यों में पवित्रता एवं श्रेष्ठता उत्पन्न न होगी, उस समय तक वह घर के वातावरण को साफ सुथरा एवं शान्तिमय नहीं बना सकती, और न ही उसके गोद में पलने वाली सन्तान विचारों तथा कार्यों द्वारा आदर्श बन सकती है।

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

(प्रेस रिलीज़)

प्रिय देश की सबसे बड़ी पहचान और गर्व-योग्य उसका संविधान है: मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी

अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया में गणतंत्र दिवस समारोह

नई दिल्ली २७ जनवरी २०२१

प्रिय देश हिन्दुस्तान दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और इस लोकतंत्र की सबसे बड़ी बुनियाद विशिष्टता व कमाल और अति गर्व योग्य उसका संविधान है जिस की वजह से पूरी दुनिया में इसको प्रशंसा की निगाह से देखा जाता है। हमारे देश के निर्माण व विकास, अम्न व भाई चारा का राज़ भी इस महान संविधान में निहित है यही वजह है कि जिस दिन हमारे असलाफ (पूर्वज) और बड़े बुजुर्गों ने अपना खूने जिगर जला कर इसको तैयार किया और इसे देश में लागू करने की कसमें खाई थीं कि हम इसी के आधार पर देश को मजबूत करेंगे, आने वाली नसलों को परवान चढ़ाएंगे और पूरे देश में व्यापक निर्माण एवं विकास का दर्या बहाएंगे। उसी दिन हर एक हिन्दुस्तानी ने यही नहीं कि इसे हंसी खुशी स्वीकार किया था बल्कि इसके आधार पर अपने आप को हर मैदान में आगे बढ़ाने का संकल्प भी किया था। आज भी हम ने देश के संविधन का पालन करके उस स्थान पर पहुंचाया है कि दुनिया में इस महान लोकतंत्र का नाम इज्जत व सम्मान के साथ लिया जाता है। यह ख्यालात मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने व्यक्त किये। वह २६ जनवरी २०२१ को मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अल माहदुल आली फिद दिरासातिल इस्लामिया स्थित अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस के समारोह में ध्वजा रोहण के बाद संबोधित कर रहे थे।

सम्माननीय अध्यक्ष ने कहा कि आज का दिन निसन्देह हमारे लिये और दुनिया के विभिन्न भागों में रहने वाले हर हिन्दुस्तानी के लिये बड़ी खुशी व हर्ष का दिन है। इस दिन के साथ जिस तरह हमारी उज्जवल तारीख, बहुत सी यादें और पूर्वजों की महान कुर्बानियाँ जुडी हुई हैं इसी तरह इस से हमारे हाल के बहुत से अहवाल और उज्जवल भविष्य भी संलग्न एवं संबद्ध हैं। इस इतिहासिक अवसर पर सभी देश वासियों को चाहे वह दुनिया के किसी भी हिस्से में हों, दिल की गहराइयों से बधाई पेश करता हूं और दुआ करता हूं कि हमारी उम्मीदों और आशओं का यह सदा बहार चमन यूं ही फलता फूलता और अम्न व शान्ति व भाई चारे का स्थल बना रहे और इस की खुश्बू पूरे देश को लाभान्वित करती रहे इस खुशी के अवसर पर हम अपने उन पूर्वजों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने प्रिय देश के संविधान (आईन) के निर्माण में लाख

जतन किए थे, कुर्बानी दी थी दुनिया की तमाम नई एवं पराचीन व्यवस्था को खंगाला था और यहां के वासियों के विभिन्न स्वभाव, रहन सहन, रीति रिवाज और धर्मों व मतों के अनुसार हर जगह से विभिन्न प्रकार के फूल, वहां की खुश्बू, और रंगा रंगी को निचोड़ करके हमारे लिये एक मजबूत लोकतांत्रिक संविधान तैयार किया था।

सम्माननीय अमीर ने अपने संबोधन में ज़ोर देकर कहा कि इस तारीखी अवसर पर हमें अपने पूर्वजों की कुर्बानियों को याद करना चाहिए और अम्न व शान्ति और संविधान एवं कानून पर अमल करके बेहतरीन शहरी बन कर उनको श्रृद्धांजलि पेश करना चाहिए और इस संकल्प को ताज़ा करना चाहिए कि जिस तरह महान कुर्बानियों और लम्बे प्रयास के बाद यह आज़ादी मिली थी और हमारे बुजुर्गों ने खूने जिगर से जिस तरह देश के महान संविधान को इन्साफ, भाई चारा और समता के आधार पर तैयार किया था हम भी इसी जजबे से इस अमानत को संभाल कर रखेंगे। केवल अपने अधिकारों की दुहाई के नाम पर इसको याद न करें बल्कि इसके तईं अपनी जिम्मेदारियों को भी समझें।

सम्माननीय अमीर ने अपने संबोधन में देश, समुदाय की तरक्की,

> सम्माननीय अमीर ने अपने संबोधन में देश, समुदाय की तरक्की, समृद्धि, अम्न व शान्ति और भाई चारा के लिये दुआ की और तमाम देशवासियों से अपील की कि देश के संविधान व कानून की पासदारी करें, एक दूसरे का सम्मान करें, देश समुदाय और मानवता के लिये अपनी जिम्मेदारी निभाएं

समृद्धि, अम्न व शान्ति और भाई चारा के लिये दुआ की और तमाम देशवासियों से अपील की कि देश के संविधान व कानून की पासदारी करें, एक दूसरे का सम्मान करें, देश समुदाय और मानवता के लिये अपनी जिम्मेदारी निभाएं और इस संकल्प को ताज़ा करें कि इस गंगा जमुनी सभ्यता, भाई चारा और आज़ादी व संविधान की सुरक्षा के जज़्बे को नई नस्ल तक भी अपने पूर्वजों ही की तरह इसी शिष्टाचार व सौहार्द के जजबे से हस्तांतरित करते रहेंगे और जिस तरह कोविड १९ के मुकाबले के लिये हम सब ने मिल कर शरई, मेडिकल और सरकारी निर्देशों को भली भांति बर्ता जिस के बेहतर परिणाम आए। हम इस महामारी के खिलाफ इसी तरह भविष्य में भी संघर्ष जारी रखेंगे। अल्लाह तआला इस घातक महामारी से प्रिय देश और पूरी मानवता को छुटकारा दे। आमीन, हिन्दुस्तान जिन्दाबाद

प्रेस रिलीज़ के अनुसार अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया स्थित अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में परंपरा के अनुसार गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन हुआ जिस में कोविडि १९ के दृष्टिगत संक्षिप्त का ख्याल रखा गया। ध्वजा रोहण अमीर मोहतरम के हाथों हुआ इस संक्षिप्त समारोह में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली, मीडिया कोआरडीनेटर मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, इंजीनियर कमरूज़्ज़मा और माहद के अन्य कार्यकर्तागण व संबन्धित लोग शरीक हुए। ध्वजारोहण के बाद राष्ट्रीय तराना पढ़ा गया।

❑ ❑ ❑

प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस आंध्राप्रदेश के पूर्व अमीर प्रसिद्ध आलिमे दीन मौलाना सफी अहमद मदनी साहब का इन्तेकाल

नई दिल्ली-२५ जनवरी २०२१

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस आंध्रा प्रदेश के पूर्व अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य व सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य, ओलामा बोर्ड तिलंगाना के अध्यक्ष, दक्षिणी भारत की मश्हूर दीनी व इल्मी शख़्सियत, मश्हूर आलिमे दीन, निस्वार्थ दाई व प्रशिक्षक, प्रमुख कलमकार और कामयाब खतीब मौलाना सफी अहमद मदनी साहब के इन्तेकाल पर गहरे रंज व गम का इज़हार किया है और उनकी मौत को देश, समुदाय और जमाअत का ख़सारा क़रार दिया है।

सम्माननीय अध्यक्ष ने कहा कि मौलाना सफी अहमद मदनी साहब जिन का आज सुबह नौ बजे अचानक शूगर लेवल कम होने के सबब लगभग ६५ साल की आयु में पैतृक भूमि हैदराबाद में इन्तेक़ाल हो गया, वह एक सक्षम, योग्यवान आलिमे दीन थे। उन्होंने जामिया सलफिया वाराणसी और जामिया इस्लामिया मदीना तैइबा में प्रमुख अध्यापकों से इल्म हासिल किया था और एक लंबी मुददत तक जामियतुल बनात हैदराबाद और जामियतुल फलाह हैदराबाद में पठन-पाठन की सेवाएं अंजाम दीं। आप ने नई पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा के लिये शाहीन नगर हैदराबाद में जामिया सलफिया के नाम से एक शैक्षिक व प्रशिक्षणिक संस्था भी स्थापित की थी। आप एक सफल अध्यापक, प्रशिक्षक, और मस्जिद मुहम्मददिया चंचल गौड़ा के स्थायी खतीब थे। आपने कई महत्वपूर्ण किताबें लिखीं और उनके अनुवाद किए जिन में से बाज मकतबा तर्जुमान से प्रकाशित हुईं। मौलाना अपने उच्च चरित्र, मिलनसार स्वभाव, निःस्वार्थता और ज्ञानात्मक वर्चस्व की वजह से बड़ी इज्ज़त की निगाह से देखे जाते थे, समुदायिक हलक़ों में काफी मान्य थे और समुदायिक प्रोग्रामों में शिर्कत करते रहते थे जमाअती गैरत से सरशार थे और जमाअती प्रोग्रामों में बड़े एहतमाम से शिर्कत करते थे। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कार्यों से काफी रूचि रखते थे आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्सों और जब तक कार्य एवं सलाहकार समिति के सदस्य रहे उसकी सभाओं में पाबन्दी के साथ शरीक होते थे। दावत व तबलीग़ के कामों से उनको बड़ी दिल चस्पी थी। कल रात की ही बात है जब आपने एक दीनी व तर्बियती सत्र की अध्यक्षता की और कमजोरी के बावजूद ३५ मिनट तक संबोधन किया और इस तरह अपनी उम्र का आखिरी हिस्सा भी दावत व सुधार के कामों पर निछावर कर दिया। मौलाना काफी दिनों से शूगर के

मरीज़ थे कुछ दिनों पहले भी सख़्त बीमार हुए थे मगर स्वस्थ्य हो गये थे लेकिन मौत का वक़्त तो तय है और आज सुबह ही उनका इन्तेक़ाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

सम्माननीय अमीर (अध्यक्ष) ने कहा कि मौलाना सफी अहमद मदनी साहब मुझ से और जमीअत के जिम्मेदारों से बड़ी मुहब्बत करते थे। कुछ दिनों पहले हैदराबाद के घातक सैलाब के अवसर पर हैदराबाद दोरे के दौराना मौलाना की बीमार पुर्सी के लिये उनके घर पर हाजिरी का सौभाग्य प्राप्त हुआ था हालांकि मौलाना अभी बीमारी से पूरी तरह छुटकारा भी नहीं पाये थे उस वक़्त उनको अत्यंत कमजोरी थी फिर भी मना करने के बावजूद हमारी मुहब्बत में बड़ी देर तक हमारे साथ बैठे रहे। अभी १७ जनवरी को प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस तिलंगाना के द्वारा आयोजित संगठनात्मक व दावती कनवेन्शन के अवसर पर मेरा हैदराबाद जाना हुआ तो सख़्त बीमारी के बावजूद मौलाना मर्कज़ी व सूबाई जिम्मेदारान से मुलाकात के लिये प्रोग्राम में हाज़िर हुए।

सम्माननीय (मोहतरम) अमीर ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि मौलाना सफी अहमद मदनी जमाअत व जमीअत और समुदाय की बड़ी पूंजी थे। अफसोस कि आज जमाअत व मिल्लत एक अनुभवी अध्यापक, वक्ता, आवाहक, लेखक और अनुवादक से वंचित हो गई। पसमांदगान में बीवी, दो लड़के सईद साहब और खालिद साहब, और चार लड़कियां हैं। उनके जनाज़े की नमाज़ आज ही मग़रिब की नमाज़ के बाद चंचल गौरा हैदराबाद में अदा की गई जिसमें हर मसलक के ओलमा अवाम और जमीअत के पदधारी, मिल्ली संगठनों ने बड़ी तादाद में शिर्कत की, जनाज़े में काफी भीड़ थी। हैदराबाद की तारीख में चन्द गिने चुने हज़रात के जनाज़े में ही ऐसी शिर्कत देखने को मिली होगी। अल्लाह तआला उनकी मग्फिरत फरमाए, खिदमात को कुबूल फरमाए, जन्नतुल फिरदौस का वासी बनाए। पसमांदगान व संबन्धितों को सबरे जमील की क्षमता दे और शहरी जमीअत अहले हदीस हैदराबाद व सिकन्दराबाद और सूबाई जमीआत अहले हदीस तिलंगाना व आंध्राप्रदेश को उनका अच्छा विकल्प अता फरमाए। आमीन

प्रेस रिलीज़ के मुताबिक़ मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अन्य पदधारियों, सदस्यगण और कार्यकर्ताओं ने भी मौलाना के इन्तेकाल पर गहरे रंज व गम और अफसोस का इज़हार किया है और उनकी मग़्फिरत और दर्जात की बुलन्दी की दुआ की है।

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरी उम्मत में से हर कोई जन्नत में जायेगा लेकिन जिसने इनकार किया सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल इन्कार करने वाला कौन है? कहाः जिसने मेरी पैरवी की वह जन्नत में जायेगा और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने इनकार किया। (बुखारी)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुफर्रिदून आगे बढ़ गये। लोगों ने पूछा मुफर्रिदून क्या है? फरमायाः अल्लाह को ज्यादा से ज्यादा याद करने वाले मर्द और औरत। (मुस्लिम)

जामिया असरिया दारूल हदीस मऊ के पूर्व शैखुल हदीस मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी का इन्तेकाल

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदीस सलफी ने उत्तर भारत की प्रसिद्ध दीनी पाठशाला जामिया असरिया दारूल हदीस मऊ के पूर्व शैखुल हदीस और उर्दू व हिन्दी के प्रतिष्ठित कलमकार पत्रकार, अनुवादक प्रसिद्ध इस्लामी स्कालर मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी साहब के इन्तेकाल पर गहरे रंज व अफसोस का इज़हार किया है और उनकी मौत को इल्म व सभ्यता का खसारा करार दिया है।

उन्होंने कहा कि मौलाना अज़ीज़ुल हक उमरी साहब एक योग्यवान (बासलाहियत) इस्लामी स्कालर थे। उन्होंने जामिया आलिया अरबिया मऊ, जामिया रहमानिया वाराणसी और जामिया दारूस्सलाम उमराबाद वगैरह सुप्रसिद्ध जामिआत में प्रतिष्ठित अध्यापकों से इल्म हासिल किया और जामिया आलिया अरबिया, मदर्सा फैजुल उलूम सियोनी मध्य प्रदेश और जामिया असरिया दारूल हदीस मऊ में पठन पाठन की सेवाएं अंजाम दीं। उनकी ज्ञानात्मक कृतियां जरीदा तजुमान पाक्षिक, आसारे जदीद, नवाए इस्लाम वगैरह में प्रकाशित होती रही हैं। आपने कई महत्वपूर्ण किताबों के हिन्दी में अनुवाद भी किए। आप की तक़रीर से भी लोग लाभान्वित हुए। आप जमाअत व जमीअत और समुदाय की बड़ी पूंजी थे। अफसोस कि पिछले कल १ दिसम्बर २०२० को पैतृक भूमि मऊ में ८१ साल की आयु में निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आज सुबह दस बजे मऊ के डोमनपुरा कब्रस्तान में उनकी तदफीन अमल में आई इस तरह जमाअत व समुदाय एक अनुभवी, लेखक, अनुवादक, अध्यापक से वंचित हो गई।

पसमांदगान में ३ लड़के हम्माद, यसार और यासिर, दो बेटियां, कई पोते पोतियां और निवासे निवासियां हैं। अल्लाह उनकी मग्फिरत फरमाए, सेवाओं को कुबूल करे, जन्नतुल फिरदौस में जगह दे, पसमांदगान और संबन्धियों को सबरे जमील अता फरमाए और जमीअत व जमाअत को उनका अच्छा विकल्प अता फरमाए प्रेस रिलीज के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अन्य जिम्मेदारान और कार्यकर्ताओं ने भी मौलाना के इन्तेक़ाल पर गहरे रंज व अफसोस का इज़हार किया और उनकी मग्फ़िरत और दर्जात की बुलन्दी के लिये दुआ की है।

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा हकदार (पात्र) कौन है? आप ने फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारे बाप। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बदगुमानी से बचो, निसन्देह बदगुमानी सबसे झूठी बात है। (बुखारी)

(जमाअती खबर)

महबूब नगर में समाज सुधारक एवं संगठनात्क कनवेन्शन

१६ जनवरी २०२१ को महबूब नगर में आयोजित एक समाज सुधारक एवं संगठनात्मक कनवेन्शन से संबोधित करते हुए मर्कज़ी जमअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि जमीअत अहले हदीस हिन्द ने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर अब तक देश के साथ एकजुटता के साथ देश के निर्माण में महत्वपूर्ण रोल अदा किया है। आतंकवाद के खिलाफ सबसे पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने फतवा दिया। उन्होंने कहा कि संगठन को और ज्यादा मज़बूत करने के लिये नये अविष्कार और टेक्नालोजी को काम में लाने की ज़रूरत है। कुरआन व हदीस की रोशनी में इन्सानियत का जो पाठ दिया गया है उसको साधारण करना होगा। इस्लाम की तालीमात पर अमल के ज़रिए आपसी भाईचारा को बढ़ाना और मानवता के लिये मिसाल बनना होगा और यह काम संगठन की मजबूती से ही होते हैं। भलाई की तरफ बुलाना और बुराई से रोकना जमीअत अहले हदीस का मिशन है। जमीअत के जिम्मेदारान को आपसी सहयोग से मिल जुल कर काम करने की ज़रूरत है। उन्होंने अवाम के दर्मियान भलाई का मामला करने और आचारण के सुधार के द्वारा अपनी संगठनात्मक जिममेदारियों को निभाने का मश्वरा दिया।

उनहोंने कहा कि बाज लोग जिम्मेदारान पर अनुचित आपत्ति करके कामों में रूकावट का सबब बनने की कोशिश करते हैं ऐसे लोगों को हसद व डाह से दिलों को पाक साफ और नकारात्मक बातों से बचना चाहिए।

इस कनवेन्शन की शुरूआत हाफिज़ मुहम्मद अहमद साहब की तिलावत से हुई जिससे मौलाना अब्दुर्रहीम मक्की, मौलाना डा० सैयद आसिफ उमरी, मौलाना शफीक़ आलम खान, और मर्कज़ी जमीअत के उपाध्यक्ष हाफिज़ अबदुल कैयूम ने भी खिताब किया। महबूब नगर जिलई जमीअत अहले हदीस के अमीर जनाब नेमतुल्लाह ने स्वागतम संबोधान दिया। कनवेन्शन का संचालन जिलई जमीअत अहले हदीस के सचिव डा० मुहम्मद मज़हरूज़्जमां सिददीकी ने किया। इस दौरे के अवसर पर जतपाल नगर, करीम नगर, हैदराबाद, सिकंदराबाद, महबूब नगर में अनेकों प्रोग्राम हुए और अमीर मोहतरम ने सूबाई व जिलई जमीअत के पदधारियों के साथ विभिन्न स्थानों का दौरा किया और जमाअती मित्रों से मुलाकात की।

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी-५४)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी)

हलाल कमाई की अहमियत

मौलाना मुहम्मद मूसा हसन

इस्लाम की शिक्षाओं में इन्सान की सभी समस्याओं का समाधान मौजूद है जिन के अन्दर इन्सान की सभी आवश्यकताओं को दलीलों से स्पष्ट तौर पर बयान किया गया है इसका कोई भी पहलू भायदे और सफलता से खाली नहीं है। अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

हलाल कमाई की तलाश कर्तव्य के बाद कर्तव्य है। अल्लाह पवित्र है और पवित्र चीज़ ही कुबूल करता है वह शरीर स्वर्ग में नहीं जाएगा जिसने हराम (अवैध) ग़िज़ा हासिल की हो।

हलाल कमाई की अहमियत व ज़रूरत के सुबूत के लिये यही काफी है कि इसके बगैर उसकी इबादत, और सदक़ा खैरात की स्वीकृति असंभव है। और हराम गिज़ा से पलने वाला शरीर जहन्नम का पात्र और जन्नत की नेमतों से वंचित होगा निसन्देह हलाल कमाई इन्सान की कायाबी के लिये अचूक नुस्खा है।

अल्लाह ने पवित्र कुरआन में अपने बन्दों को हलाल कमाई हासिल करने का हुक्म दिया है। ''फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और अल्लाह को अधिकता से याद किया करो ताकि तुम सफलता पा लो'' (सूरे जुमा-१०) दूसरी जगह कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''लोगो! ज़मीन में जितनी भी हलाल और पवित्र चीज़ें हैं उन्हें खाओ पिओ और शैतान की राह पर न चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।'' (सूरे बक़रा-१६८)

अल्लाह के नज़दीक वही बन्दा सबसे ज़्यादा प्रिय है जो हलाल तरीक़े से रोज़ी हासिल करे इसलिये हर काम में हलाल हराम का अन्तर करना अनिवार्य है। अफसोस है कि अधिकतर लोग हलाल कमाई से जी चुरा कर हराम रास्ते का चुनाव करते नज़र आ रहे हैं, शरीअत के आदेशों से कोसों दूर हैं।

हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल बेहतरीन कमाई क्या है? जवाब में फरमाया बेहतरीन कमाई यह है कि आदमी अपनी मेहनत से कमा कर खाए और क्रय विक्रय की हर वह सूरत जो शरीअत के अनुसार हो उसका मुनाफा जायज़ और लाभयोग्य है। (मिश्कात-२४२) एक हदीस में पैगम्बर (रसूल) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला पवित्र है और पवित्र चीज़ ही कुबूल फरमाता है। (मिश्कात-२४१)

जन्नत पवित्र स्थान है इसलिये हलाल कमाई और हलाल ग़िज़ा से पला हुआ इन्सान ही स्वर्ग का पात्र होगा और हलाल खाने वाले ही जन्नत में दाखिल होंगे। हराम माल से पले हुए लोगों के लिये इसमें कोई जगह नहीं हो गी जैसा कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : वह शख्स स्वर्ग में नहीं जाए गा जिस का पालन पोषण हराम ग़िज़ा से हुई हो। (मिश्कात-२४३) ऊपर बयान की गई कुरआन और हदीस की दलीलों से स्पष्ट हो जाता है कि शरीअत में हलाल कमाई की बड़ी अहमियत है और इसी आधार पर नेक कर्मों की स्वीकृति निर्भर होगी।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स० के उपदेश

हज़रत मुआज़ बिन जबल रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मुझ से रसूल स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स का आखिरी कलाम ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' हो वह जन्नत में जायेगा। (अबू दाऊद ३११६)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो कलिमे जुबान पर हलके हैं, तराजू में वज़नी हैं, रहमान के नज़दीक प्रिय हैं। सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, सुबहानल्लाहिल अज़ीम (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बन्दा बिना सोचे समझे ऐसी बात कह देता है जिसकी वजह से वह जहन्नम में इतनी गहराई में पहुंच जाता है जितनी पश्चिम और पूर्व की दूरी है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने ईमान और नेक नियती के साथ रमज़ान में क़्याम किया उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो नमाज़ में अपने सर को इमाम से पहले उठा लेता है मुझे उसके बारे में डर है कि कहीं अल्लाह तआला उसके सर को गधे के सर की तरह न बना दे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख़्स सुबह व शाम मस्जिद जाता है अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में मेहमान नवाज़ी के सामान तैयार कर देता है जब जब वह जाये। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुनाफिक़ की तीन पहचान है जब बात करे तो झूठ बोले, वादा करे तो वादा तोड़े और जब उसके पास कोई अमानत रखी जाये तो उसमें ख़्यानत करे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः टख़नों से नीचे तहबन्द का जो हिस्सा लटका हुआ होगा वह जहन्नम में जाने का सबब होगा। (बुख़ारी) अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फरिश्ते तुम में से किसी को भी दुआ देते हैं जब तक कि वह अपने नमाज़ पढ़ने की जगह में बैठा रहे और यह सिलसिला उस वक्त तक बाकी रहता है जब तक कि उसको तहारत की ज़रूरत न पड़ जाये फरिश्ते कहते हैं ऐ अल्लाह उसकी मगफिरत फरमा और उस पर रह्म कर। (बुखारी)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला तुम्हारी शक्ल व सूरत और माल की तरफ नहीं देखता है बल्कि तुम्हारे दिलों और आमाल को देखता है। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि आपने फरमाया क्यामत की निशानियों में से है कि इल्म उठा लिया जायेगा, जाहिलियत बढ़ जायेगी और शराब पिया जायेगा ज़िना (व्याभिचार) आम हो जायेगा। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरे बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने रसूल स०अ०व० को फरमाते हुए सुना कि जिस किसी मुसलमान के मरने पर चालीस ऐसे आदमी जनाज़े की नमाज़ पढ़ दें जो अल्लाह के साथ शिर्क न करते हों तो अल्लाह तआला उनकी सिफारिश उसके हक़ में कुबूल करता है। (मुस्लिम-६४८)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरिक्षत न हो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो उस से न हो तो वह मरदूद (स्वीकार नहीं) है। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम हों। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी) पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स० ने फरमायाः जब तुम्हारा गुज़र जन्नत के बागों में से हो तो उसके फल खाओ। हज़रत अबू हुरैरा रजिअल्लाहो अन्हो ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत के बाग कौन से हैं? तो मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि मस्जिदें हैं।

हसद न करो

नज्मा परवीन हाशिमी

समाज साफ सुथरा और पवित्र उस वक़्त होता है जब समाज के लोग नेक दिल और अच्छे स्वभाव के हों और जब उनका दिल निःस्वार्थ हो। इसी तरह से दिल हसद, झूठ चुगली और दूसरों पर झूठे आरोप लगाने से खाली हों और हर दिल में त्याग और आपसी मुहब्बत का जजबा हो, लेकिन आज हमारे समाज में हर किस्म की बुराइयों ने जड़ पकड़ ली है और विभिन्न प्रकार की नई बातें दीन में घुस आई हैं।

समाज को बर्बाद करने वाली बुराइयों में से एक बुराई हसद है। किसी के इल्म व हुनर और माल व दौलत के छिन जाने की आशा करने का नाम हसद व जलन है यह आशा व आरजू चाहे इस एरादे से हो कि महसूद की चीज़ उसे मिल जाए या उसे न मिले लेकिन महसूद से छिन जाए दोनों हालातों में ऐसी निय्यत अवैध है। अल्लाह जिसे चाहता है देता है और जिसे चाहता है वंचित कर देता है यह अल्लाह की व्यवस्था पर आपत्ति है और इन्सान के मानसिक पस्ती और धार्मिक पतन का प्रतीक है। हसद करने वाला हमेशा दूसरे लोगों की तबाही व बर्बादी के बारे में सोचता रहता है और उसके खिलाफ योजना बनाता है जबकि हसद करने वाला अपनी कामयाबी के लिये इतनी मेहनत करे तो उसे काफी कामयाबी हासिल हो सकती है। हर इन्सान के लिये यह अनिवार्य है कि अपना सीना हसद जलन और डाह से पवित्र रखे।

पैगम्बर मुहम्मद सल्ल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः''तुम बदगुमानी और भ्रम से बचो बदगुमानी बड़ी झूठी बात है और किसी का राज़ सुनने के लिये कान न लगाओ और टोह में न पड़ो, एक दूसरे से मुंह न मोड़ो, अल्लाह के बन्दो आपस में भाई भाई बन कर रहो''। (बुखारी-१/४८१) पैगम्बर मुहम्मद सल्ल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पहले लोगों की जो बुराइयां तुम्हारे अन्दर घुस आई हैं वह हसद व जलन हैं जो तुम्हारे दीन को मूंड देगी मैं यह नहीं कहता कि यह बाल को मूंड देगी बल्कि दीन का सफाया कर देगी। (अत्तरगीब वत-तरहीब ५४८/३) एक हदीस में यहां तक कह दिया गया कि हसद इन्सान के लिये उतना ही घातक है जितना आग लकड़ी के लिये। पैगम्बर मुहम्मद सल्ल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हसद नेकियों को इस तरह खा लेता है जिस तरह आग लकड़ी को खा लेती है। (इब्ने माजा २८२/२)

पैगम्बर मुहम्मद सल्ल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''किसी बन्दे में हसद और ईमान एक साथ जमा नहीं हो सकते'' (अत्तरगीब वत्तरहीब ५४६/३) फरमायाः हसद करने वाला मेरे रास्ते पर नहीं है कितने प्रशंसनीय हैं वह लोग जिन्होंने अपने दिल को हसद जैसी बुरी चीज़ से पाक व साफ कर लिया। जुबान को सहीह तौर पर स्तेमाल किया। और अल्लाह ने जो दिया उस पर संतुष्ट और संतोष रहे और अच्छे आचरण व व्यवहार में अपने आप को ढ़ाल लिया। हर इन्सान के लिये ज़रूरी है कि तक़्वा व पवित्रता का रास्ता अपनाए ऐसी खूबियों से सुसज्जित हो जिसे अल्लाह पसन्द करता है।

(प्रेस रिलीज़)

उत्तराखण्ड में गलेशियर फटने से हुई तबाही दुखदः मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी

नई दिल्ली ८ फरवरी २०२१

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अध्यक्ष मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने पिछले कल उत्तराखण्ड में गलेशियर फटने से हुई तबाही, लगभग १५ निर्दोष जानों की हिलाकत और १५३ लोगों के लापता होने पर गहरे रंज व गम का इज़हार किया है और कहा है कि मुसीबत की इस घड़ी में पूरा देश मृतकों, प्रभावितों और लापता लोगों के परिवार व संबन्धितों और हुकूमत के साथ खड़ा है।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि सूचनाओं के अनुसार प्रभावित स्थानों पर केन्द्रीय एवं राज्य सराकारों की तरफ से राहत व बचाव का काम सन्तुष्टि जनक तौर पर आगे बढ़ रहा है लेकिन फिर भी और ज़्यादा ध्यान और प्रयास की ज़रूरत है ताकि प्रभावितों की राहत का काम सन्तुष्टिजनक हो जाए और उनके अहवाल दुरूस्त हो जाएं और मामूल पर आ जाएं, इस भयावह हादसे ने एक बार फिर हमें आगाह किया है कि हम निमार्ण एवं विकास के नाम पर या साइंस व टेक्नोलोजी और नये नये अविष्कार की दौड़ में प्राकृतिक व्यवस्था और नदियों, पहाड़ों और फिज़ाओं में हद से ज़्यादा बदलाव न करें जो हमारे लिये खतरनाक होता चला जाए बल्कि आधुनिक अविष्कार से फायदा उठाते हुए अन्य बहुत सारी हैसियतों और प्राकृतिक मामलों पर भी ध्यान रखें और सख्त ज़रूरत के मुताबिक ही नदियों नालों, जंगलों और पहाड़ों से छेड़ छाड़ को रवा रखें। हम ने जंगलात और पेड़ों की अंधाधुंध सफाई व कटाई और पहाड़ों की खुदाई के नुक़सानात को देशीय एवं वैश्विक स्तर पर महसूस कर लिया है इस लिये हमें और ज़्यादा सावधान रहने की ज़रूरत है।

अमीर महोदय ने अपने बयान में मृतकों और प्रभावितों के परिवार वालों से हार्दिक सौहार्द व्यक्त किया है और लापता लोगों की सलामती के लिये दुआ की है।

हदीसे रसूल स०अ०व०

मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः मोमिन की मौत के बाद उसके कर्म और अच्छे कामों से जिसका उसे सवाब मिलता है वह सात हैं। इल्म जो उसने दूसरों को सिखाया और फैलाया २. नेक लड़का ३. कुरआन मजीद, जिसका किसी को इल्मी वारिस बनाया। ४. मस्जिद जिसने बनवायी ५. घर जो मुसाफिरों के लिये बनवाया। ६. नहर ७. सदक़ा जो अपनी जिन्दगी में स्वस्थ होने की हालत में दिया। इन सात कामों का सवाब मौत के बाद भी इन्सान को मिलता रहता है।

जिसने अल्लाह की खुशी के लिये मस्जिद बनायी तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में वैसा ही घर बनायेगा। (बुखारी-४५०)

हमारी सोच कैसी होनी चाहिए

नौशाद अहमद

एक बुद्धिजीवी (दानिश्वर) का कथन है कि इन्सान को इन्सानों की तरह सोचना चाहिए।

कहने को तो यह एक छोटा सा वाक्य है लेकिन इस छोटे से वाक्य में मानवता के लिये बहुत सारी नसीहतें भरी हुई हैं।

कुरआन के अनुसार इन्सान इस दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि इस संसार के पालनहार ने उसको सहीह और गलत में अन्तर करने की भरपूर योग्यता और क्षमता दे रखी है। वह हर मामले में अक़्ल का इस्तेमाल करके यह तय कर सकता है कि क्या चीज़ गलत है और क्या चीज़ सहीह है, यही खूबी उसको दुनिया के तमाम जानदारों से सर्वश्रेष्ठ और उत्तम बनाती है लेकिन अफसोस है कि हम इन्सान अच्छे और बुरे में अन्तर की क्षमता को खोते जा रहे हैं, हर इन्सान भौतिकवाद की तरफ सरपट भागे जा रहा है, हर कोई विकास के ऊंचे ऊंचे सपने देख रहा है लेकिन वह यह नहीं देख रहा है कि हम विकास का जो सपना देख रहे हैं उसकी दिशा क्या है, नकारात्मक है या सकारात्मक। तरक्की की दौड़ में शामिल होना इस पहलू से सकारात्मक है कि उसकी तरक़्की से किसी का नुकसान नहीं होना चाहिए, उसकी कमाई का एक एक हिस्सा हलाल होना चाहिए उसके विकास की नेव किसी के नुकसान पर न हो। इस्लाम इस तरह के विकास का भरपूर समर्थन करता है और ऐसे इन्सान को प्रेरित करता है।

नकारात्मक पहलू इस एतबार है कि वह अपनी तरक्की की बुनियाद दूसरों को नुक़सान पहुंचा कर करे, इस्लाम इस तरह के विकास का न समर्थन करता है न प्रेरित करता है, वह अनुचित ढंग से किए गये विकास की निन्दा करता है क्योंकि यह इन्सान की सोच को गलत दिशा में ले जाता है। सवाल यह है कि क्या हम तमाम इन्सान इन्सानों ही की तरह सोच रहे हैं, क्या हमारा सभी काम और सोच इन्सानों जैसा है, अगर इस सवाल का जवाब नहीं में दिया जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हमारी सोच इन्सानों की सोच उसी वक़्त मानी जाए गी जब हमारे अन्दर सहीह और गलत में अन्तर करने की क्षमता पैदा हो जाए, जुल्म को जुलम समझें, अपराध को अपराध समझें, बैमानी को बैमानी, छल को छल और नुकसान को नुकसान, यह सब हमारे एक अच्छे इन्सान होने का पता देता है इससे यह भी पता चलता है कि हमारी अन्तरात्मा जीवित है और हम सहीह को सहीह और गलत को गलत समझ रहे हैं। वास्तव में इन्सान होना कितना आसान है और इन्सान बनकर अपने कर्तव्यों को अंजाम देना कितना मुशिकल है।

लेकिन इन्सान इस मुश्किल को आसान बनाने का संकल्प कर ले तो फिर उसके लिये कोई चीज़ मुश्किल नहीं हो सकती शर्त यह है कि उसके अन्दर सहीह को सहीह और गलत को गलत में अन्तर करने की पूरी क्षमता पैदा हो जाये और यह क्षमता संकल्प और ठोस एरादे से पैदा होगी।

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के परिणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और कौम व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान